मैथिली (अनिवार्य विषय) 50 अंक
Part-II (Sc. Arts, Com.)

Page No.:
Date: 6/5/2020

Lecture N-22
Unit-II

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो.- 9040201409

## संकलन
## "भाषा ओ मातृभूमि"

यदुनाथ झा 'यदुवर' एहि निबन्धक माध्यमे भाषा ओ मातृभूमिक महत्वक विश्लेषण कयलनि अछि। यदुवर जी संस्कृतक विद्वान छलाह जे हिनका धर्म, कर्म, नीति आदि पर बहुत विश्वास छलनि। ओना हिनक मैथिली भाषा मे बहुत कम रचना अछि तथापि अपन एहि निबन्ध मे मातृभूमि प्रेमक व्याख्यान लिखने छथि। हिनक देशप्रेम सँ किछु ने किछु ज्ञान प्राप्त होमय करत।

मातृ शब्द प्रेम सँ सान अवगत रहैत अछि। एहि शब्दक माधुर्य किछु भिन्न होइत छैक। जेना दुग्ध आ पानि मे मिसरी घोरि देल जाइत छैक आ ओकर स्वादे किछु भिन्न भऽ जाइत छैक तहिना मातृभाषाक मिठासो किछु भिन्न रहैत छैक। बहुत पैघ लेखक सँ पुछल गेल जे दुनियाँ मे सबसँ मधुर शब्द की अछि?

नहि पर ओ उत्तर देल जाला। हुनके बच्चाके धैर्य देनिहारि, जकरा क पुचा मोछि ओ शान्ति सिखौल आदि, थाकल रहितो जकरा देखि आराम भेटय अथवा एकहि ठाम कहि सकैत छी जाहि शब्द सं मोन के शान्ति भेटय से शब्द थिक - माता। माता शब्द पवित्र शब्द प्रेमक साक्षात मूर्ति होइछ। यदि कोना मनुष्य के एहि शब्दक उच्चारण स शान्ति, भक्ति, नमन, पुजन, वन्दन सहै आदि उत्पन्न नहि होअए से समाजक बीच रहै जोकरक नहि अछि।

संसारमे प्रकार शब्दक बाहुल्य अछि, एकर मधुरता माता शब्दे स ज्ञात होइछ। योगी, सन्यासी आदिके ध्यान लगौने रहैत छथि से 'मुक्ति' भकारहि क शब्द थिका मैथिलीमे माता, फारसीमे मादर अंग्रेजीमे मदर आदि प्रकार शब्दक प्रयोग देखबैछ। अपन देशमे एहि शब्दक आओर विशेष महत्व अछि यथा- मातृभूमि, मातृभाषा, गौमाता, गंगामाता, यमुनामैया आदि। पति-पत्नी क सम्बन्ध दू प्राणक एक प्राण होइत अछि ते ओकरा अर्द्धांगिनी कहल गेलैक अछि। संसारक सृष्टि सब एकरे सं भेलैइ परन्तु एकरा मातृ स्वरूप स्नेह आदर्श नहि बुझल जाइछ। कारण जे माय बनैत अछि ओकर बच्चाक हेतु संसार केओ रमणिक अभाव केओ नहि रहैत छैक। एहि कारणे केओ पिता-माता नहि बनैत

वैदिक माता-पिता, वेदोमे पहिने मातृमान आदि लरवल पितृमान। मनुजी 'मनुस्मृति' मे माताक स्थान पिता सं दस गुणा अधिक लिखने छथि।

जगतजननी मातृभूमि बड़ कठर नहि माता रहैत छैक मातृभूमि मे रहि केओ ~~प्रवास~~ पथिक-पुरोहित होइछ, जे अपन मातृभाषा सं प्रेम नहि करैछ ओ मातृभूमि सं की प्रेम करत? ओहन व्यक्ति के रहलो सँ की ओकर त ना महकलैल मातृभाषा ओ मातृभूमि। हम सब सुगाक कथा सुनने छी जे मातृभूमिक वियोग मे अपन प्राण त्याग कए दैत अछि। हमरो सब के कर्तव्य बनैत अछि जे मातृभाषा एवं मातृभूमिक प्रति अनुराग राखि आ एकर श्रीवृद्धि मे सदैव लागल रही। अपन मातृभाषा समान आनन्द दैअ वाली कोनो भाषा नाहि। संसार मे केओ अपन मातृभूमि ओ मातृभाषा छोड़ि प्रसन्न नहि रहि सकैत अछि। जे एकरा बिसरैत अछि ओ कृतघ्न कहबैत अछि। कुपुत्र भऽ सकैछ परन्तु माता कुमाता नहि भऽ सकैछ।

हमर सबहक भारत देश एकसँ एक विद्वान पुत्रक जन्म देने अछि। भगवान राम कृष्ण ओ एहि देश मे अवतार लेने छथि। व्यास, वाल्मीकि, याज्ञवल्क्य, जैमिनि, कपिल, जनक, मनु, भास्कराचार्य, शंकराचार्य, प्रताप, शिवाजी आ गाँधी प्रभृति महान विद्वानक

जन्म एहि धरति पर भेल। जे अपन ज्योत्सना सँ संसार भरि कें केन्द्रियमान कएलनि। हमरा सभ पर मातृभूमिक ऋण अछि से कहियो नहि बिसरब। हमरा सबहक कर्तव्य थिक जे जाहि मातृभूमि मे जन्म भेल अछि तकरा हम सब तन, मन, धन अर्पण करी। ई दुःखद अछि जे हमसब मातृभूमिक सेवा करब बिसरि गेलहुँ। दोसर राज्य वा देश के देखि सिखि सकैत छी सबहक मोन मे देशप्रेमक भाव रहबाक चाही तखन देशक तरक्की आ अकाल दूर होएत, शिक्षाक विकास होएत, एकता मे वृद्धि होएत, कला-कौशल कृषि-वाणिज्य मे विकास होएत आ अधलाह काजक ह्रास होएत। एहि हेतु हमरा सब के प्राणपण सँ चेष्टा करबाक थिक। एहि थिक मातृभाषाक महत्व।

—x—

डॉ. अरविन्द झा
मो.- ८०[illegible]०२०९४०५